ʻदुगुणं विरलिय दुगुणवड्ढिजोगट्ठाणं समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि एगेगपक्खेवो पावदि । ते घेत्तूण उप्पण्णुप्पण्णजोगट्ठाणं पडिरासिय कमेण पक्खित्ते पुव्विल्लट्ठा-णादो दुगुणमध्दाणं गंतूण चदुग्गुणवड्ढी उप्पज्जदि । पुणो जहण्णजोगट्ठाणपक्खेवभाग-हारं चदुगुणं विरलिय चदुगुणजोगट्ठाणं समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि एगेगपक्खेवो पावदि । पुणो एदे घेत्तूण पुव्वं व पक्खित्ते चदुग्गुणमध्दाणं गंतूण अट्ठगुणवड्ढिजोगट्ठा-णमुप्पज्जदि । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेत्ति । गुणहाणिअध्दाणपमाणजाणा-वणट्ठं णाणागुणहाणिसलागाणं पमाणपरुवणट्ठं च उत्तरसुत्तं भणदि-

ʻएगजोगदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतरं सेडीए असंखेज्जदिभागो, णाणाजोगदुगुणवड्ढि - हाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो ।। १९५ ।.

ʻएत्थ ताव गुणहाणिअध्दाणपमाणाणयणविहाणं वुच्चदे । तं जहा- एगादिदुगुण-दुगुणकमेण णाणागुणहाणिसलागमेत्तायामेण द्विदरुवाणं ।१ ।२ ।४ ।८ ।१६ ।३२ ।६४ ।१२८ ।२५६ ।५१२ ।१०२४ ।२०४८ ।४०९६ । सव्वसमासो एत्तियो होदि ।८१९१ ।। एदेण जोगट्ठाणध्दाणे ।६५५२८ । भागे हिदे पढमगुणहाणिअध्दाणं-

------------------------------

< योगस्थानके प्रक्षेपभागहारका विरलन करके दुगुणी वृद्धि युक्त योगस्थानको समखण्ड करके देनेपर रुपके प्रति एक एक प्रक्षेप प्राप्त होता है । उनको ग्रहण कर उत्तरोत्तर उत्पन्न हुए योगस्थानको प्रतिराशि करके क्रमसे उसमें मिलानेपर पूर्व स्थानसे दुगुणा अध्वान जाकर चतुर्गुणी वृध्दि उत्पन्न होती है । पश्चात् चतुर्गुणित जघन्य योगस्थानके प्रक्षेपभागहारका विरलन करके चतुर्गुणित योगस्थानको समखण्ड करके देनेपर रुपके प्रति एक एक प्रक्षेप प्राप्त होता है । पश्चात् इनको ग्रहण कर पूर्वके ही समान मिलानेपर चौगुणा अध्वान जाकर अठगुणी वृध्दि युक्त योगस्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थान तक ले जाना चाहिये । गुणहानिअध्वानप्रमाणके ज्ञापनार्थ और नानागुणहानिशलाकाओंके प्रमाणके प्ररुपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं । >

ʻएक-योग-दुगुणवृध्दि-हानिस्थानान्तर श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण और नाना-योग-दुगुणवृध्दि-हानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।। १९५ ।.

< यहां पहले गुणहानिअध्वानके प्रमाणके लानेका विधान कहते हैं । वह इस प्रकार हैं-- एकको आदि लेकर दुगुणे दुगुणे क्रमसे नानागुणहानिशलाका मात्र आयामसे स्थित १ + २ + ४ + ८ + १६ + ३२ + ६४ + १२८ + २५६ + ५१२ + १०२४ + २०४८ + ४०९६ रुपोंका सर्वयोग ८१९१ इतना होता है । इसका योगस्थानअध्वानोंमें भाग देनेपर (६५५२८ ( ८१९१ = ८) प्रथम गुणहानिका अध्वान श्रेणिकेअसंख्यातवें भाग आता है । >

-------------------------------

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे चूलिया

'सेडीए असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । एदं (प्रतिषु 'एवं' इति पाठः।) ठविय पुव्विल्लदुगुण-दुगुणगदरुवेहि गुणिदे तदित्थगुणहाणिट्ठाणंतरमागच्छदि । संपहि गुणहाणिसलागासु आणिज्जमा-णासु पढमगुणहाणिणा ।८। जोगट्ठाणद्धाणं खंडिय लद्धं रुवाहियं काऊण अध्दछेद-णए कदे जत्तियाओ (प्रतिषु 'केत्तियाओ' इति पाठः।) अध्दछेदणयसलागाओ तत्तियमेत्ताणि णाणागुणहाणिट्ठाणंत-राणि । एत्थ अप्पाबहुगपरुवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

'णाणाजोगदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि । एगजोग-दुगुणवड्ढि-हाणिटठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।।१९६।।

'एत्थ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो । एवमेदे पुव्वं परुविदसव्वाहियारा सव्वजीवसमासाणमुववादजोगट्ठाणाणं एगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणं परिणामजोगट्ठाणाणं च पुध पुध परुवेदव्वा । सुहुमणिगोदजहण्णजोगट्ठाणप्पहुडि जाव सण्णिपंचिंदिय-पज्जत्तउक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणेत्ति एदेसिं सव्वजीवसमासाणमुववादजोगट्ठाणाणि एगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि परिणामजोगट्ठाणाणि च एगसेडिआगारेण छहि अंतरेहि सहिदाणि रचेदूण एदेसिं ट्ठाणाणमुवरि अणंतरोवणिधादिअणुओगद्दाराणि पुव्वं व-

-------------------------------

< इसको स्थापित कर पूर्वोक्त दुगुणे दुगुणे गये हुए रुपोंसे गुणित करनेपर वहांका गुणहानि-स्थानान्तर आता है । अब गुणहानिशलाकाओंको लाते समय प्रथम गुणहानि (८) द्वारा योगस्थानाध्वानको खण्डित करनेपर जो लब्ध हो उसे एक रुपसे अधिक करकेअर्धच्छेद करनेपर जितनी अर्धच्छेदशलाकायें हों उतने मात्र नाना गुणहानिस्थानान्तर होते हैं । यहां अल्पबहुत्वके प्ररुपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं ->

ʻनानायोगदुगुणवृध्दि-हानिस्थानान्तर स्तोक हैं । उनसे एकयोगदुगुणवृध्दि-हानि-स्थानान्तर असंख्यातगुणा है ।।१९६।।

< यहां गुणकार श्रेणिका असंख्यातवां भाग है । इस प्रकार पूर्वप्ररुपित इन सब अधि-कारोंकी प्ररुपणा सब जीवसमासों सम्बन्धी उपपादयोगस्थानों, एकान्तानुवृध्दियोगस्थानों और परिणामयोगस्थानोंके विषयमें पृथक् पृथक् करना चाहिये । सूक्ष्म निगोदके जघन्य योगस्थानसे लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान तक इन सब जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान, एकान्तानुवृध्दियोगस्थान और परिणामयोगस्थानोंकी एक श्रेणिकेआकारसे छह अन्तरोंसे सहित रचना करकेइन स्थानोंकेऊपर अनन्तरोप-निधा आदि अनुयोगद्वारोंकी पहिलेके ही समान प्ररुपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि अनन्तरोपनिधाकी प्ररुपणा करते समय छह अन्तरोंका उल्लंघन करके>

-------------------------------

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

ʻपरुवेदव्वाणि । णवरि अणंतरोवणिधे भण्णमाणे छअंतराणि उल्लंघिय वत्तव्वं, तत्थ हेट्ठिमजोगट्ठाणे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदे उवरिमजोगट्ठाणुप्पत्तीदो ।।

ʻसंपहि देसामासियभावेण एदेहि अणुयोगद्दारेहि सूचिदअवहारकालादिपरुवण-मेत्थ कस्सामो । तं जहा- जहण्णजोगट्ठाणपमाणेण सव्वजोगट्ठाणाणि केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तेण । तं जहा- जहण्णजोगट्ठाणादो पक्खे-वुत्तरकमेण गदसव्वजोगट्ठाणाणि छण्णमंतराणमभावेण पुव्विल्लदीहत्तादो सादिरेय-- दीहभावाणि ट्ठविय मूलग्गसमासं कादूण अध्दिय (प्रतिषु 'लध्दिय' इति पाठः।) ट्ठविदे पुव्विल्लायाममेत्तउक्कस्स-जोगट्ठाणध्दाणि जहण्णजोगट्ठाणध्दाणि (आप्रतौ 'उक्कस्सजोगट्ठाणध्दाणि उक्कस्सजोगजहण्ण--जोगध्दाणट्ठाणाणि' इति पाठः।) च लब्भंति । पुणो अध्दिय (प्रतिषु 'लध्दिय' इति पाठः।) एगखंडस्सुवरि बिदियखंडे ठविदे पुव्विल्लायामध्दमेत्ताणि जहण्णजोगट्ठाणाणि उक्कस्सजोगट्ठाणाणि च होंति । एवं होंति त्ति कादूण रचिदजोगट्ठाणध्दाणध्देण (ताप्रतौ 'जोगट्ठाणध्दाणेण' इति पाठः।) रुवाहियजोगगुणगारगुणिदेण जहण्णजोगट्ठाणे गुणिदे जहण्णजोगट्ठाणपमाणेण सव्वजोगट्ठाणाणि आगच्छंति । पुणो

रुवाहियजोगगुणगारगुणिदजोगट्ठाणध्दाणध्देण पुव्विल्लरासिम्हि भागे हिदे जहण्णजोग-ट्ठाणमागच्छदि । तेण जहण्णजोगट्ठाणस्स सेडीए असंखेज्जदिभागो भागहारो होदि त्ति वुत्तं ।

------------------------------

< कथन करना चाहिए, क्योंकि, वहां अधस्तन योगस्थानको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर उपरिम योगस्थानकी उत्पत्ति है । >

< अब देशामर्शक स्वरुपसे इन अनुयोगद्वारोंकेद्वारा सूचित अवहारकाल आदिकी प्ररुपणा यहां करते हैं । वह इस प्रकार है--जघन्य योगस्थानके प्रमाणसे सब योगस्थान कितने कालसे अपह्रत होते हैं ? वे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र कालसे अपह्रत होते हैं । यथा- जघन्य योगस्थानसे आगे प्रक्षेप अधिक क्रमसे गये हुए सब योगस्थानोंको छह अन्तरोंका अभाव होनेसे पूर्वकी दीर्घतासे साधिक दीर्घता युक्त स्थापित कर मूलाग्रसमास करके आधा कर मूलाग्रसमास करकेआधा कर स्थापित करनेपर वे पूर्वकेआयाम प्रमाण उत्कृष्ट योगस्था-नोंकेआधे और जघन्य योगस्थानोंके आधे प्राप्त होते हैं । पुन: अर्धित एक खण्डके ऊपर द्वितीय खण्डको स्थापित करनेपर चूंकि पूर्वोक्त आयामसे अर्ध आयाम प्रमाण जघन्य योग-स्थान और उत्कृष्ट योगस्थान होते हैं, अत एव रुप अधिक योगगुणकारसे गुणित ऐसे रचित योगस्थानाध्वानके अर्ध भागसे जघन्य योगस्थानको गुणित करनेपर जघन्य योगस्थानके प्रमाणसे सब योगस्थान आते हैं । पुन: एक अधिक योगगुणकारसे गुणित योगस्थानाध्वानके अर्ध भागका पूर्वोक्त राशिमें भाग देनेपर जघन्य योगस्थान आता है । इसी कारण जघन्य योगस्थानका भागहार श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है, ऐसा कहा गया है । >

------------------------------



'बिदियजोगट्ठाणपमाणेण अवहिरिज्जमाणे विसेसहीणेण कालेण अवहिरिज्जंति । एवं णेदव्वं जाव पढमदुगुणवड्ढि त्ति । पुणो तेण पमाणेण अवहिरिज्जमाणे पुव्विल्ल-भागहारादो अध्दमेत्तेण कालेण अवहिरिज्जंति । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेत्ति । पुणो (ताप्रतौ 'पुणो' इत्येतत्पदं नास्ति।) उक्कस्सजोगट्ठाणपमाणेण सव्वजोगट्ठाणाणि केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति? रचिदजोगट्ठाणध्दाणध्दं जोगगुणगारेण खंडिय तत्थ एगखंडे रुवाहियजोगगुणगारेण गुणिदे जं लध्दं तत्तियमेत्तेण कालेण अवहिरिज्जंति । एत्थ कारणं जाणिय

वत्तव्वं । जहण्ण-जोगट्ठाणप्पहुडि उवरि सव्वत्थ अवहारकाले आणिज्जमाणे भागहारपरिहाणी जाणि-दूण कायव्वा । एवं भागहारपरुवणा गदा ।

ʿपढमजोगट्ठाणफद्दयाणि सव्वजोगट्ठाणफद्दयाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदि-भागो । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेत्ति, असंखेज्जदिभागमेत्तेण विसेसाभा--वादो । भागाभागपरुवणा गदा ।

ʿसव्वत्थोवाणि जहण्णजोगट्ठाणफद्दयाणि । उक्कस्सजोगट्ठाणफद्दयाणि असंखेज्जगुण--णाणि । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, जोगगुणगारो त्ति वुत्तं होदि ।

-------------------------------

< द्वितीय योगस्थानके प्रमाणसे अपहृत करनेपर सब योगस्थान विशेष हीन कालसे अपहृत होते हैं । इस प्रकार प्रथम दुगुणवृध्दि तक ले जाना चाहिए । पश्चात् उक्त प्रमाणसे अपहृत करनेपर वे पूर्व भागहारकी अपेक्षा अर्ध भाग प्रमाण कालसे अपहृत होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थान तक ले जाना चाहिए । अब उत्कृष्ट योगस्थानके प्रमाणसे सब योगस्थान कितने कालसे अपहृत होते हैं ? रचित योगस्थानके अर्ध भागको योगगुणकारसे खण्डित कर उसमें एक खण्डको रुपाधिक योगगुणकारसे गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतने मात्र कालसे वे अपहृत होते हैं । यहां कारणका कथन जानकर करना चाहिये । जघन्य योगस्थानको आदि लेकर आगे सब जगह अवहारकालको लाते समय भागहारकी हानि जानकर करना चाहिये । इस प्रकार भागहारकी प्ररुपणा समाप्त हुई । >

< प्रथम योगस्थानके स्पर्धक सब योगस्थानोंके स्पर्धकोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे सब योगस्थान सम्बन्धी स्पर्धकोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थान तक ले जाना चाहिये, क्योंकि, असंख्यातवें भागकी अपेक्षा वहां और कोई विशेषता नहीं है । भागाभागप्ररुपणा समाप्त हुई । >

< जघन्य योगस्थानके स्पर्धक सबमें स्तोक हैं । उनसे उत्कृष्ट योगस्थानके स्पर्धक असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । >

-------------------------------

ʿअजहण्ण-अणुक्कस्सजोगट्ठाणफद्दयाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । अणुक्कस्सजोगट्ठाणफद्दयाणि विसेसाहियाणि जहण्णजोगट्ठाणफद्द-एहि अजहण्णजोगट्ठाणफद्दयाणि विसेसाहियाणि जहण्णजोगफद्दएहि ऊणउक्कस्सजोग-ट्ठाणफद्दयमेत्तेण । सव्वजोगट्ठाणफद्दयाणि विसेसाहियाणि जहण्णजोगट्ठाणफद्दयमेत्तेण । एवं परंपरोवणिधा समत्ता ।ʾ

ʿसमयपरुवणदाए चदुसमइयाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असं-खेज्जदिभागमेत्ताणि ।। १९७ ।।ʾ

ʿएत्थ समयपरुवणाए त्ति किमट्ठं वुच्चदे ? पुव्वुद्दिट्ठअहियारसंभालणट्ठं । समयपरुवणा किमट्ठमागदा ? समएहि विसेसिदजोगट्ठाणाणं पमाणपरुवणट्ठं; समएहि परुवणदा समयपरुवणदा, तीए ‘समयपरुवणदाए’त्ति सद्दवुप्पत्तीदो । जेसु जोगट्ठाणेसु जीवा चत्तारिसमयमुक्कस्सेण परिणमंति ताणि जोगट्ठाणाणि चदुसमइयाणि त्ति भणंति । तेसिं पमाणं सेडीए असंखेज्जदिभागो, एवं वुत्ते सुहुमेइंदियलध्दिअपज्जत्तप्पहुडि जाव पंचिंदियलध्दिअपज्जत्तओ त्ति एदेसिं परिणामजोगट्ठाणाणं एइंदियादि जाव सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तजहण्णपरिणाम-जोगट्ठाणप्पहुडि उवरि तप्पाओग्गसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणं णिरंतरं

------------------------------

< इस गुणकारसे अभिप्राय योगगुणकारका है । उत्कृष्ट योगस्थानके स्पर्धकोंसे अजघन्य-अनुत्कृष्ट योगस्थानोंके स्पर्धक असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार श्रेणिका असंख्यातवां भाग है । उनसे अनुत्कृष्ट योगस्थानोंके स्पर्धक जघन्य योगस्थानके स्पर्धकोंसे हीन उत्कृष्ट योगस्थान सम्बन्धी स्पर्धकों मात्र विशेषसे अधिक हैं । उनसे सब योगस्थानोंके स्पर्धक जघन्य योगस्थानके स्पर्धकों मात्र विशेषसे अधिक हैं । इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई । >

ʿसमयप्ररुपणताके अनुसार चार समय रहनेवाले योगस्थान श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।। १९७ ।।ʾ

< शंका--सूत्रमें ‘समयपरुवणदाए’ यह पद किसलिये कहा गया है ? >

< समाधान--उक्त पद पूर्वोद्दिष्ट अधिकारका स्मरण करानेकेलिये कहा गया है । >

< शंका--समयप्ररुपणा किसलिये प्राप्त हुई है ? >

< समाधान--समयोंसे विशेषताको प्राप्त हुए योगस्थानोंके प्रमाणको बतलानेके लिये समयप्ररुपणाका अवतार हुआ है, क्योंकि, समयोंसे प्ररुपणता समयप्ररुपणता, उस समय-प्ररुपणतासे; ऐसी यहां शब्दकी व्युत्पत्ति है । >

< जिन योगस्थानोंमें जीव उत्कर्षसे चार समय परिणमते हैं वे चतु:सामयिक अर्थात् चार समय रहनेवाले योगस्थान कहे जाते हैं । उनका प्रमाण श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र है, ऐसा कहनेपर सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकको आदि लेकर पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक तक इनके परिणामयोगस्थानोंका तथा एकेन्द्रियको >

वेयणामहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

ʿगदाणं परिणामजोगट्ठाणाणं च गहणं, णोववादजोगट्ठाणाणमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणं च गहणं; तेसिमेगसमयं मोत्तूण उवरि अवट्ठाणाभावादो ।ʾ

ʿपंचसमइयाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।ʾ

ʿजाणि जोगट्ठाणाणि एगसमयमादि कादूण जाव उक्कस्सेण पंचसमओ त्ति जीवा परिणमंति ताणि पंचसमइयाणि णाम । तेसिं पि पमाणं सेडीए असंखेज्जदि-भागो । एदाणि जोगट्ठाणाणि उवरि भण्णमाणछसमइयादिजोगट्ठाणाणि च एइंदिया-दिपंचिंदियादियावसाणाण परिणामजोगेसु जोजेदव्वाणि, ण सेसेसु ।ʾ

ʿएवं छसमइयाणि सत्तसमइयाणि अट्ठसमइयाणि जोगट्ठा-णाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।। १९९ ।।ʾ

ʿपंचसमइयजोगट्ठाणेहिंतो उवरिमाणि छ-सत्त-अट्ठसमयाणं पाओग्गाणि जाणि जोगट्ठाणाणि तेसि पमाणं पुध पुध सेडीए असंखेज्जदिभागो ।ʾ

ʿपुणरवि सत्तसमइयाणि छसमइयाणि पंचसमइयाणि चदुसम-इयाणि उवरि तिसमइयाणि बिसमइयाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।। २०० ।।ʾ

------------------------------

< आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थानसे लेकर आगे तत्प्रायोग्य श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र निरन्तर गये हुए परिणामयोग--स्थानोंका भी ग्रहण करना चाहिये, उपपादयोगस्थानों और एकान्तानुवृध्दियोगस्थानोंका ग्रहण नहीं करना चाहिये; क्योंकि, उनका एक समयको छोडकर आगे अवस्थान सम्भव नहीं है । >

ʻपंचसामयिक योगस्थान श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं ।। १९८ ।

< जिन योगस्थानोंमें जीव एक समयको आदि लेकर उत्कर्षसे पांच समय तक परिण-मते हैं वे पंचसामायिक कहलाते हैं । उनका भी प्रमाण श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र है । इन योगस्थानोंको तथा आगे कहे जानेवाले षट्सामायिक आदि योगस्थानोंको एकेन्द्रियसे लेकर पंचेन्द्रिय तकके परिणामयोगोंमें जोडना चाहिये, शेषोंमें नहीं । >

ʻइसी प्रकार षट्सामायिक, सप्तसामायिक अष्टसामायिक योगस्थान श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं ।।१९९ ।

< पंचसामयिक योगस्थानोंसे आगेके छह, सात व आठ समयोंके योग्य जो योग-स्थान हैं उनका प्रमाण पृथक् पृथक् श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र है । >

ʻफिर भी सप्तसामायिक, षट्सामायिक, पंचसामायिक, चतु;सामायिक तथा उपरिम त्रिसामायिक व द्विसामायिक योगस्थान श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं ।। २०० ।

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

ʻजवमज्झादो हेट्ठिमाणं सत्तसमइयादिजोगट्ठाणाणं पुव्वं पमाणं परुविदं (आप्रतौ 'पुव्वं परुविदं पमाणं' इति पाठः ।)। पुणो जवमज्झादो उवरिमाणं सत्त-छ पंच-चदुसमइय (अ-आका-प्रतिषु 'पंच-दुसमइय-'इति पाठः ।) जोगट्ठाणाणं तेसिं चेव पमाणं (प्रतिषु 'पमाणाणं' इति पाठः ।) परुवेमि त्ति जाणावणट्ठं पुणरवि गहणं कदं । एदेहि पुव्वं परुविद--जोगट्ठाणेहिंतो तिसमइय-बिसमइय जोगट्ठाणाणि उवरि होंति त्ति जाणावणट्ठं उवरिसद्दणिद्देसो (अ-आ-काप्रतिषु 'उवरि सत्तणिद्देसो', ताप्रतौ 'उवरि (सत्त) त्ति णिद्देसो' इति पाठः ।) कदो । अधवा एसो उवरिसद्दो मज्झादीवओ । तेण सव्वत्थ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तहेट्ठिमचदुसमइजोगट्ठाणाणं उवरि पंचसमइयजोगट्ठाणाणि होंति । तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि छसमइयाणि होंति । तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि सत्तसमइयाणि । तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताण--मुवरि अट्ठसमइयाणि । तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि छसमइयाणि । तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि पंचसमइयाणि । तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमु-वरि चदुसमइयाणि । तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि तिसमइयाणि । तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि विसमइयाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदि-

-----------------------------

< यवमथ्यसे नीचेके सप्तसामायिक आदि योगस्थानोंका प्रमाण पूर्वमें कहा जा चुका है । अब यवमध्यसे ऊपरके जो सात, छह, पांच और चार समय निरन्तर प्रवर्तनेवाले योग-स्थान हैं उनके ही प्रमाणकी प्ररुपणा करते हैं इस बातके ज्ञापनार्थ सूत्रमें ‘पुणरवि’ पदका ग्रहण किया गया है । इन पूर्वप्ररुपित योगस्थानोंमें से तीन समय व दो समय निर-न्तर प्रवर्तनेवाले योगस्थान ऊपर होते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ उवरि शब्दका निर्देश किया है । अथवा, यह ‘उवरि’ शब्द मध्यदीपक है । इस कारण सर्वत्र श्रेणिके असं-ख्यातवें भाग मात्र नीचेके चार समयवाले योगस्थानोंके ऊपर पांच समयवाले योग-स्थान होते हैं । श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उन योगस्थानोंके ऊपर छह समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं । श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर सात समय रहने-वाले योगस्थान होते हैं । श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर आठ समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं । श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उक्त योगस्थानोंके ऊपर फिरसे भी सात समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं । श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर छह समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं । श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर पांच समय रहनेवाले योगस्थान होते है । श्रेणिके असंख्यातवे भाग मात्र उनके चार समय रहनेवाले योग-स्थान होते हैं । श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर तीन समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं । श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर दो समय रहनेवाले योगस्थान >

-----------------------------

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

ʻभागमेत्ताणि त्ति जोजेदव्वाणि (अ-आ-क-प्रतिषु ‘जोजेयव्वो’ इति पाठः।)। एवं समयपरुवणा समत्ता ।

ʻवड्ढिपरुवणदाए अत्थि असंखेज्जभागवड्ढि-हाणी संखेज्जभा-गवड्ढि-हाणी (संखेज्जभागवड्ढि-हाणी इत्येतावानयं पाठः प्रति-- ध्वनुपलभ्यमानो मप्रतितोऽत्र योजितः।) संखेज्जगुणवड्ढि-हाणी असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणी ।।

ʻवड्ढिपरुवणा किमट्ठमागदा ? जोगट्ठाणेसु एत्तियाओ वड्ढि-हाणीओ अत्थि एत्तियाओ णत्थि त्ति जाणावणट्ठमागदा । णेदं पओजणं, परंपरोवणिधादो चेव तदवगमादो ? ण, दुगुण-

दुगुणजोगट्ठाणपदुप्पायणे तिस्से वावारादो (आप्रतौ ‘बावारादो तदो’ इति पाठः।)। जोगट्ठाणवड्ढि-हाणीणं पमाण-परुवणट्ठं तासिं कालपरुवणट्ठं च वड्ढिपरुवणा आगदा त्ति सिध्दं ।’

‘संपहि एत्थ वड्ढिपरुवणं कस्सामो । तं जहा- जहण्णजोगट्ठाणपक्खेवभागहारं विर-लेदूण जहण्णजोगट्ठाणं समखंडं कादूण दिण्णे रुवं पडि एगेगजोगपक्खेवो पावदि । पुणो तत्थ एगपक्खेवं घेत्तूण जहण्णजोगट्ठाणं पडिरासिय पक्खित्ते असंखेज्जभागवड्ढी होदि ।’

------------------------------

< श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं, यह जोडना चाहिये । इस प्रकार समयप्ररुपणा समाप्त हुई । >

‘वृद्धिप्ररुपणाके अनुसार योगस्थानोंमें असंख्यातभागवृद्धि-हानि, संख्यातभाग--वृद्धि-हानि, संख्यातगुणवृद्धि-हानि और असंख्यातगुणवृद्धि-हानि; ये वृद्धियां व हानियां होती हैं ।। २०१ ।।’

< शंका--वृद्धिप्ररुपणा किसलिए प्राप्त हुई ? >

< समाधान--योगस्थानोंमें इतनी वृद्धि-हानियां हैं और इतनी नहीं हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ यह वृध्दिप्ररुपणा प्राप्त हुई है । >

< शंका--यह कोई प्रयोजन नहीं है, क्योंकि, परम्परोपनिधासे हो उनका ज्ञान हो जाता है ? >

< समाधान--नहीं, क्योंकि, परम्परोपनिधाका व्यापार दुगुणे दुगुणे योगस्थानोंका परिज्ञान कराने में है । योगस्थानोंकी वृद्धि व हानिका प्रमाण बतलानेके लिए तथा उनके कालकी प्ररुपणा करनेके लिए वृद्धिप्ररुपणा प्राप्त हुई है, यह सिद्ध है । >

< अब यहां वृध्दिकी प्ररुपणा करते हैं । वह इस प्रकार है-जघन्य योगस्थानके प्रक्षेपभागहारको विरलित कर जघन्य योगस्थानको समखण्ड करके देनेपर रुपके प्रति एक एक योगप्रक्षेप प्राप्त होता है । अब उनमेंसे एक योगप्रक्षेपको ग्रहण करके जघन्य योगस्थानको प्रतिराशि कर उसमें मिला देनेपर असंख्यातभागवृध्दि होती है । द्वितीय >

------------------------------



‘बिदियपक्खेवं बिदियजोगट्ठाणं पडिरासिय पक्खित्ते वि असंखेज्जभागवड्ढी चेव होदि । एवं पक्खेवभागहारमुक्कस्ससंखेज्जमेत्तखंडाणि कादूण तत्थ एगखंडम्मि जत्तिया पक्खेवा अत्थि ते

रुवूणा जाव पविसंति ताव असंखेज्जभागवड्ढी चेव होदि । एत्थ जहण्णजोगट्ठाणं पेक्खिदूण असंखेज्जभागवड्ढी समत्ता ।

ʻपुणो संपुण्णेगखंडमेत्तपक्खेवेसु पविट्ठेसु जहण्णजोगट्ठाणं पेक्खिदूण संखेज्ज-भागवड्ढीए आदी जादा । पुणो बिदियखंडमेत्तपक्खेवेसु पविट्ठेसु संखेज्जभागवड्ढी चेव । एवं ताव संखेज्जभागवड्ढी चेव गच्छदि जाव रुवूणविरलणमेत्तपक्खवा पविट्ठा त्ति । एत्थ संखेज्जभागवड्ढीए समत्ती जादा ।

ʻतदो अण्णेगे (ताप्रतौ ʻअणेगेʼ इति पाठः ।) पक्खेवे पविट्ठे जहण्णजोगट्ठाणं (प्रतिषु ʻजहण्णजोगट्ठाणाणंʼ इति पाठः ।) पेक्खिदूण संखेज्ज-गुणवड्ढीए आदी जादा । एत्तो प्पहुडि उवरि संखेज्जगुणवड्ढी ताव गच्छदि जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणयमेत्तगुणहाणीणं चरिमजोगट्ठाणेत्ति । तत्तो अणंतरउवरिमजोगट्ठाणं जहण्णजोगट्ठाणं पेक्खिदूण जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणं होदि । एत्थ असंखेज्जगुणवड्ढीए आदी जादा । एत्तो प्पहुडि उवरिमसव्वजोगट्ठा-णाणि जहण्णजोगट्ठाणं पेक्खिदूण असंखेज्जगुणाणि चेव,

------------------------------

< योगस्थानको प्रतिराशि करके उसमें द्वितीय प्रक्षेपको मिला देनेपर भी असंख्यातभागवृध्दि ही होती है । इस प्रकार प्रक्षेपभागहारके उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण खण्ड करके उनमेंसे एक खण्डमें जितने प्रक्षेप हैं वे एक रुपसे हीन होकर जब तक प्रविष्ट होते हैं तब तक असंख्यात-भागवृध्दि ही होती है । यहां जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा करके असंख्यातभागवृध्दि समाप्त हो जाती है । >

< पुनः सम्पूर्ण एक खण्ड प्रमाण प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होनेपर जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा करके संख्यातभागवृध्दिका आदि स्थान होता है । पश्चात् द्वितीय खण्ड मात्र प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होनेपर संख्यातभागवृध्दि ही रहती है । इस प्रकार रुप कम विरलन राशिके बराबर प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होने तक संख्यातभागवृध्दि ही चली जाती है । यहां संख्यातभागवृध्दिकी समाप्ति हो जाती हैं । >

< तत्पश्चात् एक अन्य प्रक्षेपके प्रविष्ट होनेपर जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा करके संख्यातगुणवृध्दिका आदि स्थान होता है । यहांसे लेकर आगे जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानियोंके अन्तिम योगस्थान तक संख्यात-गुणवृध्दि ही चली जाती है । उससे आगेका अनन्तर योगस्थान जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा करके जघन्य परीतासंख्यातसे गुणित होता है ।

यहां असंख्यातगुणवृध्दिका आदि स्थान होता है । यहांसे लेकर आगेके सब योगस्थान जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा करकेअसंख्यातगुणित ही हैं, क्योंकि, वहां दूसरी वृध्दियोंका अभाव है । इस >

------------------------------



ʻतत्थण्णवड्ढीणमभावादो । एवं जहण्णजोगट्ठाणमस्सिदूण जहा चत्तारिवड्ढीओ परुविदाओ तहा (ताप्रतौ

'चत्तारिवड्ढीओ तहा' इति पाठः।) सव्वजोगट्ठाणाणि पुध पुध अस्सिदूण समयाविरोहेण (अ-आ-क-प्रतिषु 'समयाविरोहोण' इति पाठः।) चत्तारिवड्ढि--परुवणा कायव्वा ។

ʻतिण्णिवड्ढि-तिण्णिहाणीओ (प्रतिषु 'तिण्णिवड्ढि-तिण्णिहाणी' इति पाठः।) केवचिरं कालादो होंति ? जह-ण्णेण एगसमयं ।। २०२ ।។

ʻतिण्णिवड्ढि तिण्णिहाणीओ त्ति वुत्ते आदिमाणं तिण्हं गहणं कायव्वं, असंखे-ज्जगुणवड्ढि-हाणीणमुवरि पुध परुवणदंसणादो । असंखेज्जभागवड्ढीए जहण्णेण (अप्रतौ-'मस्सिदूण' इति पाठः।) एगसमयमच्छिदूण बिदियसमए सेसतिण्णं वड्ढीणमेगवड्ढिं चदुण्णं हाणीणमेगत्तम-हाणिं वा गदस्स असंखेज्जभागवड्ढिकालो जहण्णेण एगसमओ होदि । एवं सेसदोव-ड्ढीणं तिण्णिहाणीणं (अ-आ-काप्रतिषु 'दोवड्ढितिण्णिहाणीणं' इति पाठः।) च एगसमयपरुवणा कायव्वा ។

ʻउक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो (वुड्ढीहाणिचउक्कं तम्हा कालोत्थ अंतिमल्लीणं । अंतोमुहुत्तमावलिअसंखभागो य सेसाणं ।। क.प्र.१,११.)।। २०३ ।។

ʻएदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा-एगजीवो चम्हि कम्हि वि जोगट्ठाणे ट्ठिदो असं-खेज्जभागवड्ढिजोगं गदो । तत्थ एगसमयमच्छिदूण बिदियसमए तत्तो असंखेज्जदि-

------------------------------

< प्रकार जघन्य योगस्थानका आश्रय करकेजैसे चार वृध्दियोंकी प्ररुपणा की गई है वैसे ही पृथक् पृथक् सब योगस्थानोंका आश्रय करके समयाविरोधपूर्वक चार वृध्दियोंकी प्ररु-पणा करना चाहिये । >

ʿतीन वृध्दियां और तीन हानियां कितने काल होती हैं ? जघन्यसे वे एक समय होती हैं ।। २०२ ।।

< ‘तीन वृध्दियां और तीन हानियां’ ऐसा कहनेपर आदिकी तीन वृध्दि-हानियोंकी ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, असंख्यातगुणवृध्दि और हानिकी पृथक् प्ररुपणा देखी जाती है । असंख्यातभागवृध्दिपर जघन्यसे एक समय रहकर द्वितीय समयमें शेष तीन वृध्दियोंमें किसी एक वृध्दि अथवा चार हानियोंमें किसी एक हानिको प्राप्त होनेपर असंख्यातभाग-वृध्दिका काल जघन्यसे एक समय होता है । इसी प्रकार शेष दो वृध्दियों और तीन हानियोंके एक समयकी प्ररुपणा करना चाहिये । >

ʿउत्कर्षसे उक्त हानि-वृध्दियोंका काल आवलीकेअसंख्यातवें भाग प्रमाण है ।। २०३ ।।

< इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है--एक जीव जिस किसी भी योगस्थानमें स्थित होकर असंख्यातभागवृध्दियोगको प्राप्त हुआ । वहां एक समय रहकर दूसरे समयमें उससे असंख्यातवें भागसे अधिक योगको प्राप्त हुआ । इस प्रकार >

-------------------------------



ʿभागुत्तरजोगं गदो । एवं दोण्णमसंखेज्जभागवड्ढिसमयाणमुवलध्दी जादा । तदो तदि-यसमए तत्तो असंखेज्जदिभागुत्तरमण्णजोगं गदो । तत्थ तिण्णिमसंखेज्जभागवड्ढि-समयाणमुवलध्दी जादा । एवं णिरंतरमसंखेज्जभागवड्ढिं ताव कुणदि जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति । तदो उवरिमसमए णिच्छएण अण्णवड्ढीणम-ण्णहाणीणं वा गच्छदि त्ति । एवं सेसवड्ढि-हाणीणं पि सगणामणिद्देसं काऊण उक्क-स्सकालपरुवणा कायव्वा ।

ʿअसंखेज्जगुणवड्ढि-हाणी केवचिरं कालादो होंति ? जहण्णेण एगसमओ ।। २०४ ।।

ʿअसंखेज्जगुणवड्ढिमसंखेज्जगुणहाणिं वा एगसमयं काऊण अणप्पिदवड्ढि-हाणीणं गदस्स एगसमओ होदि ।

ʿउक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।। २०५ ।।

ʿअसंखेज्जगुणवड्ढीए असंखेज्जगुणहाणीए वा सुट्ठु जदि बहुअं कालमच्छदि तो अंतोमुहुत्तं चेव । पुणो उवरिमसमए णिच्छएण अण्णवड्ढि-हाणीओ गच्छदि त्ति जवमज्झादो

हेट्ठिमचदुसमइय-उवरिमतिसमइय-बिसमइयजोगट्ठाणेसु चत्तारि--वड्ढि-हाणीयो अत्थि त्ति । तत्थच्छणकालो जहण्णेण एगसमयं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सेसजोगट्ठाणेसु परियट्टणकालो

-------------------------------

< असंख्यातभागवृध्दिके दो समयोंकी उपलब्धि हुई । पश्चात् तृतीय समयमें उसकी अपेक्षा असं-ख्यातवें भागसे अधिक दूसरे योगको प्राप्त हुआ । वहां असंख्यातभागवृध्दिके तीन समय उपलब्ध होते हैं । इस प्रकार उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक निरन्तर असंख्यातभागवृध्दिको करता है । तत्पश्चात् आगेके समयमें निश्चयसे दूसरी वृध्दियोंको या हानियोंको प्राप्त होता है । इसी प्रकार शेष वृध्दि-हानियोंके भी अपने नामका निर्देश कर उत्कृष्ट कालकी प्ररुपणा करना चाहिये । >

ʻअसंख्यातगुणवृद्धि और हानि कितने काल होती हैं ? जघन्यसे वे एक समय होती हैं ।। २०४ ।।

< असंख्यातगुणवृद्धि अथवा असंख्यातगुणहानिको एक समय करके अविवक्षित वृद्धि या हानिको प्राप्त होनेपर एक समय होता है । >

ʻउक्त वृद्धि व हानि उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है ।। २०५ ।।

< असंख्यातगुणवृद्धि अथवा हानिपर यदि बहुत अधिक काल रहे तो वह अन्त-र्मुहूर्त तक ही रहता है । इसके पश्चात् आगेके समयमें निश्चयसे दूसरी वृद्धि या हानिको प्राप्त होता है । इसी कारण यवमध्यसे नीचेके चार समय रहनेवाले और ऊपरके तीन समय व दो समय रहनेवाले योगस्थानोंमें चार वृद्धियां और हानियां होती हैं । वहां रहनेका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्ष अन्तर्मुहूर्त है । शेष योगस्थानोंमें >



ʻजहण्णेण एगसमयमुक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो, तत्थ असंखेज्जभागवड्ढिं मोत्तूण अण्णवड्ढीणमभावादो ।

ʻसंपहि जवमज्झादो उवरिमचदुसमयपाओग्गजोगट्ठाणेसु परिणममाणस्स असं-खेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढीओ चेव होंति । कधमेदं णव्वदे ? सव्वजीवसमा-साणं जहण्णपरिणामजोगट्ठाणप्पहुडि जाव अप्पप्पणो उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणेत्ति एदाणि जोगट्ठाणेत्ति अस्सिदूण उवरि भण्णमाणअप्पाबहुगसुत्तम्मि जवमज्झादो हेट्ठिम-उवरिमचदुसमइयजोगट्ठाणाणि

सरिसाणि त्ति णिद्दिट्टत्तादो । जोगट्टाणे च हेट्टिमसव्व-ध्दाणादो सादिरेयमध्दाणं गंतूण उवरिमदुगुणवड्ढी उप्पज्जदि । एवं सदि हेट्ठोव-रिमपंचसमायादिजोग (मप्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'पंचसमयाओजोग-'इति पाठः ।) ट्ठाणाणि पढमगुणहाणिमेत्ताणि जदि होंति तो उवरिम-चदुसमइयाणं चरिमसमए दुगुणवड्ढी समुप्पज्जेज्ज (अ-आ-काप्रतिषु 'समप्पेज्ज' मप्रतो 'समुप्पेज्ज' इति पाठः ।) । ण च एवं, तहाविहोवदेसा-भावादो । पुणो केरिसो उवदेसो त्ति पुच्छिदे उच्चदे--उवरिमचदुसमइयजोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणादो हेट्ठा असंखेज्जदिभागमेत्तमोसरिय दुगुणवड्ढी होदि त्ति उवरिमच-दुसमयपाओग्गेसु दो चेव वड्ढीओ होंति त्ति एसो पवाइज्जंत (अ-आ-काप्रतिषु 'पवाइज्जंति' इति पाठः ।) उवएसो । पवाइज्जंत-

------------------------------

< परिवर्तनका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, क्योंकि, वहां असंख्यातभागवृद्धिको छोडकर दूसरी वृद्धियोंका अभाव है । >

< अब यवमध्यसे ऊपरके चार समय योग्य योगस्थानोंमें परिणमन करनेवालेके असं-ख्यातभागवृध्दि और संख्यातभागवृद्धि ही होती है । >

< शंका---यह कैसे जाना जाता है ? >

< समाधान--सब जीवसमासोंके जघन्य परिणामयोगको आदि लेकर अपने अपने उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान तक इन योगस्थानोंका आश्रय करके आगे कहे जानेवाले अल्प--बहुत्वसूत्रमें 'यवमध्यसे नीचेके और ऊपरके चार समय योग योगस्थान सदृश हैं' ऐसा निर्देश किया गया है । और योगस्थानमें अधस्तन समस्त अध्वानके साधिक अध्वान जाकर उपरिम दुगुणवृद्धि उत्पन्न होती है । ऐसा होनेपर अधस्तन व उपरिम पंचसामयिक आदि योगस्थान यदि प्रथम गुणहानि मात्र होते हैं तो ऊपरके चतु:सामायिक योगस्थानोंके अन्तिम समयमें दुगुणवृद्धि उत्पन्न हो सकती है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वैसा उपदेश नहीं है । तो फिर कैसा उपदेश है, ऐसा पूछनेपर कहते हैं कि ऊपरके चार समय योग्य योग-स्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे नीचे असंख्यातवें भाग मात्र उतर कर दुगुणवृद्धि होती है । अत एव ऊपरके चार समय योग्य योगस्थानोंमें दो ही वृद्धियां होती हैं, ऐसा परम्पराप्राप्त उपदेश है । >

------------------------------

'उवएसो त्ति कुदो णव्वदे ? पवाइज्जंतउवएसेण जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एक्कारस समया । अण्णदरेण उवएसेण जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पण्णारस समया त्ति पदेसबंधसुत्तादो त्ति । तेण णव्विदि (अप्रतौ 'णव्वदे' इति पाठः।) जहा उवरिमचदुसमइयजोगट्ठाणेसु दो चेव वड्ढीओ, संखेज्जगुणवड्ढी णत्थि त्ति ।.

'संपहि एदेणेव सुत्तेण सूचिदवड्ढिकालाणमप्पाबहुगं वुच्चदे । तं जहा---सव्व त्थोवो असंखेज्जभागवड्ढि-हाणिकालो । संखेज्जभागवड्ढि-हाणिकालो असंखेज्ज-गुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? असंखेज्जभागवड्ढि (हाणि) विसयादो संखेज्जभागवड्ढि हाणिविसयस्स संखेज्जगुणत्तुवलंभादो त्ति । विसयगुणगाराणुसारी कालगुणगारो किण्ण वुत्तो ? ण, परियट्टणभेदेण कालस्स असंखेज्जगुणत्तं पडि विरोहाभावादो । संखेज्जगुणवड्ढिसंखेज्जगुणहाणीणं (ताप्रतौ 'विरोहाभावादो । संखेज्जगुणहाणीणं' इति पाठः।) कालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? संखेज्जभागवड्ढि-हाणिविसयादो संखेज्जगुणवड्ढि-हाणीणं विसयस्स संखेज्जगुणत्तुव-लंभादो । असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणिकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए,

-------------------------------

< शंका--यह परम्पराप्राप्त उपदेश है, ऐसा कहांसे जाना जागा है ? >

< समाधान--परम्पराप्राप्त उपदेशके अनुसार जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे ग्यारह समय हैं । अन्यतर उपदेशके अनुसार जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पन्द्रह समय हैं, इस प्रदेशबन्धसूत्रसे वह जाना जाता है । >

< इसीसे जाना जाता है कि ऊपरके चार समय योग्य योगस्थानोंमें दो ही वृध्दियां होंती हैं, संख्यातगुणवृध्दि नहीं होती । >

< अब इसी सूत्रसे वृध्दिकालोंके अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है--असंख्यातभागवृध्दि और हानिका काल सबमें स्तोक है । उससे संख्यातभागवृध्दि और हानिका काल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, असंख्यातभागवृध्दि व हानिके विषयसे संख्यातभागवृध्दि और हानिका विषय संख्यातगुणा पाया जाता है । >

< शंका--विषयगुणकारके समान कालके गुणकारको क्यों नहीं कहा ? >

< समाधान--नहीं, क्योंकि, परिवर्तनके भेदसे कालके असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । >

< उससे संख्यातगुणवृध्दि और संख्यातगुणहानिका काल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, संख्यातभागवृध्दि और हानिके विषयसे संख्यातगुणवृध्दि और हानिका विषय संख्यातगुणा पाया जाता है । उससे असंख्यातगुणवृध्दि और हानिका काल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुण >

-------------------------------

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे चूलिया

[असंखेज्जदिभागो । कुदो ? संखेज्जगुणवड्ढि-हाणिविसयादो असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणि-विसयस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । वड्ढि- हाणिकालो विसेसाहियो । केत्तियमेत्तेण ? सेसवड्ढी-हाणिकालमेत्तेण । एवं वड्ढिपरुवणा समत्ता ]

[अप्पाबहुएत्ति सव्वत्थोवाणि अट्ठसमइयाणि जोगट्ठाणाणि ।]

[अप्पाबहुगपरुवणा किमट्ठमागदा ? अट्ठसमइयादिजोगट्ठाणाणं सेडीए असंखेज्जदिभागत्तणेण अवगदपमाणाणं थोवबहुत्तपरुवणट्ठं । सव्वत्थोवाणि (काप्रतौ 'सव्वत्थोवा' इति पाठः।) त्ति भणिदे उवरि भण्णमाणजोग (अ-आ-काप्रतिषु 'भण्णमाणओजोग-',ताप्रतौ 'भण्णमाण (ओ) जोग' इति पाठः।) ट्ठाणेहिंतो थोवाणि त्ति भणिदं होदि ]

[दोसु वि पासेसु सत्तसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ।। २०७ ।]

[को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । उवरि वुच्चमाणअप्पाबहु--गपदेसेसु सव्वत्थ एसो चेव गुणगारो वत्तव्वो ]

-------------------------------

< कार आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, संख्यातगुणवृध्दि और हानिके विषयसे असंख्यातगुणवृध्दि और हानिका विषय असंख्यातगुणा पाया जाता है । वृध्दि और हानिका काल

उससे विशेष अधिक है । कितने मात्र विशेषसे वह अधिक है ? वह शेष वृध्दियों और हानियोंके काल मात्र विशेषसे अधिक है । इस प्रकार वृध्दिप्ररुपणा समाप्त हुई। >

ʿअल्पबहुत्वकेअनुसार आठ समय योगस्थान सबमें स्तोक हैं ।। २०६ ।ỵ

< शंका--अल्पबहुत्वप्ररुपणा किसलिये प्राप्त हुई है ? >

< समाधान--श्रेणिके असंख्यातवें भाग स्वरुपसे जिनका प्रमाण ज्ञात हो चुका है उन अष्टसामयिक आदि योगस्थानोंका अल्पबहुत्व बतलानेके लिये अल्पबहुत्व-प्ररुपणा प्राप्त हुई है । >

< सबमें स्तोक हैं ऐसा कहनेपर आगे कहे जानेवाले योगस्थानोंसे स्तोक हैं, यह अभिप्राय ग्रहण किया गया है । >

ʿदोनों ही पार्श्वभागोंमें सात समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ।। २०७ ।ỵ

< गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वप्रदेशोंमें सर्वत्र यही गुणकार कहना चाहिये । >

------------------------------

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

ʿदोसु वि पासेसु छसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ।। २०८ ।ỵ

ʿदोसु वि पासेसु पंचसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ।। २०९ ।ỵ

ʿएदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ỵ

ʿदोसु वि पासेसु चदुसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ।। २१० ।ỵ

ʿउवरि तिसमइयाणि जोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि(अ-आ-काप्रतिषु 'असंखेज्जगुणाणि' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते।) ।२११ỵ

ʿएत्थ उवरि त्ति णिद्देसो किमट्ठं कदो । उवरि भण्णमाणतिसमइय-बिसमइय-जोगट्ठाणाणि (मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रतौ 'तिस-मइयजोगट्ठाणा', आ-ताप्रत्यो: 'तिसमइयजोगट्ठाणाणि', काप्रतौ

‘तिसमइयाणि जोगट्ठाणाणि’ इति पाठः।) जवमज्झादो उवरि चेव होंति, हेट्ठा ण होंति त्ति जाणावणट्ठं ।

ʿबिसमइयाणि जोगट्ठाणाणि असंखेज्जाणि ।। २१२ ।।

------------------------------

ʿदोनों ही पार्श्वभागोंमें छह समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ।। २०८ ।।

ʿदोनों ही पार्श्वभागोंमें पांच समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ।। २०९ ।।

< ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं ।>

ʿदोनों ही पार्श्वभागोंमें चार समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ।। २१० ।।

ʿउनसे तीन समय योग्य उपरिम योगस्थान असंख्यातगुणे हैं ।। २११ ।।

< शंका--यहां ‘उपरि’ शब्दका निर्देश किसलिये किया है ? >

< समाधान--आगे कहे जानेवाले तीन समय और दो समय योग्य योगस्थान यव-मध्यसे ऊपर ही होते हैं नीचे नहीं होते; इस बातकेज्ञापनार्थ सूत्रमें उवरि शब्दका निर्देश किया है ।>

ʿउनसे दो समय योग्य योगस्थान असंख्यातगुणे हैं ।। २१२ ।।

------------------------------

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे चूलिया

ʿसुगमं । एवमप्पाबहुगपरुवणा समत्ता ।

ʿजाणि चेव जोगट्ठाणाणि ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि । णवरि पदेसबंधट्ठाणाणि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि ।। २१३ ।।

ʿदसहि अणुयोगद्दारेहि (अ-आ-काप्रतिषु ‘अणियोगद्दाराहि’ इति पाठः।) जोगट्ठाणपरुवणाए परुविदाए किमट्ठमिदं सुत्त-मागदं ? वुच्चदे - एदाणि सवित्थरेण परुविदजोगट्ठाणाणि चेव पदेसबंधकारणाणि ण अण्णाणि त्ति जाणाविय गुणिदकम्मंसिओ उक्कस्सजोगेसु चेव, खविदकम्मंसिओ जहण्णजोगेसु चेव हिंडाविदो । तस्स सफलत्तपरुवणदुवारेण बंधमस्सिदूण

अजहण्ण- अणुक्कस्सदव्वाणं ट्ठाणपरुवणट्ठमागदा । एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे ताव जोगट्ठाणाणं सव्वेसिं पि रचणा कायव्वा । एवं कादूण एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा-जाणि चेव जोगट्ठाणाणि त्ति भणिदे जत्तियाणि जोगट्ठाणाणि त्ति वुत्तं होदि । ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि त्ति भणिदे तत्तियाणि चेव पदेसबंध--ट्ठाणाणि त्ति घेत्तव्वं । तं जहा---जहण्णजोगेण अट्ठं बंधंतस्स तमेगं णाणा--े

------------------------------

< यह सूत्र सुगम है । इस प्रकार अल्पबहुत्वप्ररुपणा समाप्त हुई । >

ʻजो योगस्थान हैं वे ही प्रदेशबन्धस्थान हैं । विशेष इतना है कि प्रदेशबन्ध-स्थान प्रकृतिविशेषसे विशेष अधिक हैं ।।२१३।।

< शंका--दस अनुयोगद्वारोंसे योगस्थान प्ररुपणाकेकर चुकनेपर फिर यह सूत्र किसलिये आया है ? >

< समाधान--इस शंकाका उत्तर कहते हैं । विस्तारसे कहे गये ये योगस्थान ही प्रदेशबन्धकेकारण हैं, अन्य नहीं हैं, ऐसा जतलाकर गुणितकर्मांशिकको उत्कृष्ट योगोंमें ही और क्षपितकर्मांशिकको जघन्य योगोंमें ही जो घुमाया है उसकी सफलताकी प्ररुपणा द्वारा बन्धका आश्रय करकेअजघन्य-अनुत्कृष्ट द्रव्योंकेस्थानोंकी प्ररुपणाकेलिये उक्त सूत्र प्राप्त हुआ है । >

< इस सूत्रका अर्थ कहते समय प्रथमत: सभी योगस्थानोंकी रचना करना चाहिये । ऐसा करकेइस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है 'जाणि चेव जोगट्ठाणाणि' ऐसा कहनेपर जितने योगस्थान हैं ऐसा उसका अर्थ होता है । 'ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि' ऐसा कहनेपर उतने ही प्रदेशबन्धस्थान हैं यह अर्थ ग्रहण करना चाहिये । यथा-- जघन्य योगसे आठ कर्मोंको बांधनेवालेकेवह >

------------------------------



ʻवरणीयस्स पदेसबंधट्ठाणं होदि । पुणो पक्खेवुत्तरजोगट्ठाणेण बिदिएण बंधमाणस्स बिदियं पदेसबंधट्ठाणं होदि । एदेण कमेण णेयव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेत्ति । एवं णीदे जोगट्ठाणमेत्ताणि चेव णाणावरणीयस्स पदेसबंधट्ठाणाणि लध्दाणि हवंति । तदो जाणि चेव जोगट्ठाणाणि ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि त्ति सिध्दं । एवमाउअवज्जाणं सव्वकम्माणं वत्तव्वं । णवरि आउअस्स उववाद-

एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि मोत्तूण सेसपरिणामजोगट्ठाणमेत्ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि वत्तव्वाणि ।

'णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि त्ति एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा---एत्थ ताव संदिट्ठीए जहण्णजोगदव्वमट्ठसट्ठि-सदमेत्तं होदि ।१६८।। सव्वजोगट्ठा-णाणं पमाणं संदिट्ठीए छत्तीसुत्तरतिसदमेत्तं होदि ।३३६।। पुव्वमेत्तियमेत्ताणि पदेसबंधट्ठाणाणि णाणावरणीएण लध्दाणि ।
'संपहि जहा एदेहिंतो विसेसाहियाणि णाणावरणीयपदेसबंधट्ठाणाणि होंति तहा परुवेमो- जहण्णजोगेण अट्ठ पयडीओ बंधमाणस्स णाणावरणभंगो । संदिट्ठीए एक्कवीस ।२१। सत्तं बंधमाणस्स णाणावरणभंगो (अ-आ-काप्रत्यो: 'भागो' इति पाठ: ।)। चउवीस ।२४। संपहि एत्थं दोण्हं दव्वाणं सरिसत्तं णत्थि । पुणो कधं होदि त्ति भणिदे जहण्णजोगट्ठाणादो सत्तमभागब्भहियजोगट्ठाणेण

-------------------------------

< ज्ञानावरणीयका एक प्रदेशबन्धस्थान होता है । पश्चात् प्रक्षेप अधिक द्वितीय योगस्थानसे बांधनेवालेके द्वितीय प्रदेशबन्धस्थान होता है । इस क्रमसे उत्कृष्ट योगस्थान तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार ले जानेपर योगस्थानोंके बराबर ही ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान प्राप्त होते हैं । अत एव जितने ही योगस्थान हैं उतने ही प्रदेशबन्धस्थान हैं, यह सिध्द है । इसी प्रकार आयुको छोडकर सब कर्मोके कहना चाहिये । विशेषता यह है कि आयु कर्मके उपपाद और एकान्तानुवृध्दि योगस्थानोंको छोडकर शेष परिणामयोगस्थानोंके बराबर ही प्रदेशबन्धस्थानोंको कहना चाहिये । >

< णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि इस सूत्रांशका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है--यहां सदृष्टिमें जघन्य योगके द्रव्यका प्रमाण एक सौ अडसठ है (१६८) । सब योगस्थानोंका प्रमाण संदृष्टिमें तीन सौ छत्तीस (३३६) है । पहिले ज्ञानावरणीयके द्वारा इतने मात्र प्रदेशबन्धस्थान प्राप्त किये गये हैं । >

< अब जिस प्रकार इससे विशेष अधिक ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान होते हैं उसे बतलाते हैं---जघन्य योगसे आठ प्रकृतियोंको बांधनेवालेकी प्ररुपणा ज्ञानावरणके समान है । संदृष्टिमें इनके लिये इक्कीस (२१) अंक हैं । सात प्रकृतियोंको बांधनेवालेकी प्ररुपणा ज्ञानावरणके समान है । इसके लिये संदृष्टिमें चौबीस (२४) अंक हैं । अब यहां दोनों द्रव्योंके

सदृशता नहीं है । फिर कैसे सदृशता होती है, ऐसा पूछनेपर कहते हैं कि जघन्य योगस्थानसे सातवें भाग अधिक योगस्थानकेद्वारा >

-------------------------------

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे चूलिया

'अट्ठं बंधमाणस्स (आप्रतौ 'बंधमाणियस्स' इति पाठः।) णाणावरणदव्वं जहण्णजोगट्ठाणेण सत्तं बंधमाणस्स णाणावरण (अ-आ-काप्रतिषु 'सत्तबंधमाणा-' इति पाठः।) दव्वं च सरिसं होदि । एवं सरिसं कादूण अट्ठविहबंधगो अट्ठपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण सत्तविहबंधगो जहण्णजोगट्ठाणादो सत्तपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण पुणो बंधावेदव्वो । एवं बंधे दोण्णं णाणावरणदव्वं सरिसं होदि । एत्थ सत्तसु जोगट्ठाणेसु छज्जोग-ट्ठाणाणि अपुणरुत्ताणि लध्दाणि । सत्तमजोगट्ठाणं पुणरुत्तं, अट्ठविहबंधगदव्वेण समाणत्तादो । तेण तमवणेदव्वं । पुणो वि अट्ठविहबंधगो अट्ठपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण बंधमाणो, सत्तपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण बंधमाणो (अ-आ-का-प्रतिषु 'बंधमाणस्स', ताप्रतौ 'बंधमाणस्स (बंधमाणो)' इति पाठः।) सत्तविहबंधगो च सरिसा । एत्थ वि छ-अपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति । सत्तमं पुणरुत्तं होदि । एवं णेदव्वं जाव वुक्कस्सजोगट्ठाणेण बंधमाणअट्ठविहबंधगणाणावरणदव्वेण तत्तो अट्ठमभागहीणजोग-ट्ठाणेण बंधमाणसत्तविहबंधगणाणावरणदव्वं सरिसं जादेत्ति। एत्थ अपुणरुत्तपदेस--बंधट्ठाणेसु आणिज्जमाणेसु अट्ठमभागहीणसव्वजोगट्ठाणध्दाणमिच्छा कायव्वा । किमट्ठं ऊणं (अ-आ-काप्रतिषु 'किमट्ठमाणं' इति पाठः।) कीरदे ? एत्तियमेत्तजोगट्ठाणेहि (अप्रतौ 'एत्तियमेत्तंहि जोगट्ठाणेहि', आप्रतौ 'एत्तियमेत्तं जोगट्ठाणेहि' इति पाठः।) सत्तविहबंधगो उक्कस्सजोगट्ठाणं ण पत्तो त्ति ।'

-------------------------------

< आठको बांधनेवालेका ज्ञानावरणद्रव्य और जघन्य योगस्थानसे सात प्रकृतियोंको बांधनेवालेका ज्ञानावरणद्रव्य सदृश होता है । इस प्रकार सदृश करकेआठ प्रक्षेप अधिक योगस्थानसे सप्तविध बन्धकको फिरसे बंधाना चाहिये । इस प्रकार बन्ध होनेपर दोनोंका ज्ञानावरणद्रव्य सदृश होता है । यहां सात योगस्थानोंमें छह योगस्थान अपुनरुक्त पाये जाते हैं । सातवां योगस्थान पुनरुक्त है, क्योंकि, वह अष्टविध बन्धककेद्रव्यसे समान है । अत एव उसको कम करना चाहिये । फिरसे

भी आठ प्रक्षेप अधिक योगस्थानसे बांधनेवाला अष्टविध बन्धक और सात प्रक्षेप अधिक योगस्थानसे बांधनेवाला सप्तविध बन्धक, ये दोनों सदृश हैं । यहां यहां भी छह अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं । सातवां स्थान पुनरुक्त है । इस प्रकार तब तक ले जाना चाहिये जब तक कि उत्कृष्ट योगस्थानसे बांधनेवाले अष्टविध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यसे उसकी अपेक्षा आठवें भागसे हीन योगस्थान द्वारा बांधनेवाले सप्तविध बन्धकका ज्ञानावरणद्रव्य समान न हो जावे । यहां अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थानोंको लाते समय आठवें भागसे रहित समस्त योगस्थानाध्वानको इच्छा राशि करना चाहिये ।>

< शंका--आठवें भागसे हीन किसलिये किया जाता है ? >

< समाधान--चूंकि इतने मात्र योगस्थानोंसे सप्तविध बन्धक उत्कृष्ट योगस्थानको नहीं प्राप्त हुआ है, अत एव उतना हीन किया गया है ।>

------------------------------

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

ʽसंपहि सत्तसु जोगट्ठाणेसु जदि छ-अपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति तो अट्ठमभाग-हीणसव्वजोगट्ठाणाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सव्व-जोगट्ठाणाणं छ-अट्ठभागा लब्भंति ।

| ६ |
|---|
| ८ |

पुणो सत्तविहबंधगे पक्खेवुत्तरकमेण उव-रिमजोगट्ठाणेहि बंधाविदे सव्व-जोगट्ठाणमट्ठमभागमेत्तपदेसबंधट्ठाणाणि णाणावरणीयस्स लब्भंति ।

| १ |
|---|
| ८ |

पुणो एदं पुव्विल्लट्ठाणेसु पक्खित्ते सत्त अट्ठभागा होंति ।

| ७ |
|---|
| ८ |

संपहि एत्थ एत्तियाणि चेव णाणावरणपदेसबंधट्ठाणाणि लद्धाणि ।

'संपहि सत्त-छव्विहबंधगे अस्सिदूण लब्भमाणट्ठाणाणं परुवणं कस्सामो । तं जहा - जहण्णजोगट्ठाणेण बंधमाणछव्विहबंधगणाणावरणीयदव्वेण तत्तो छब्भागुत्त-रजोगट्ठाणेण बंधमाणसत्तविहबंधगणाणावरणदव्वं सरिसं होदि । पुणो सत्तपक्खेवा-हियजोगट्ठाणेण बंधमाणसत्तविहबंधगस्स णाणावरणीयदव्वेण छव्विहबंधगस्स छजोग-ट्ठाणाणि चडिदूण बंधमाणस्स णाणावरणदव्वं सरिसं होदि । एत्थ पंचपदेसबंधट्ठा-णाणि अपुणरुत्ताणि लब्भंति । छट्ठं पुणरुत्तं, तेण तमवणेदव्वं । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेण सत्तबंधमाणणाणावरणीयदव्वेण उक्कस्सट्ठाणादो सत्तमभाग-हीणजोगट्ठाणेण बंधमाणछव्विहबंधगस्स णाणावरणदव्वं सरिसं

-------------------------------

< अब सात योगस्थानोंमें यदि छह अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं तो आठवें भागसे रहित सब योगस्थानोंमें कितने अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर सब योगस्थानोंके आठ भागोंमेंसे छह भाग (६/८) प्राप्त होते हैं । पुन: सप्तविध बन्धकको प्रक्षेप अधिक क्रमसे उपरिम योगस्थानोंके द्वारा बंधानेपर सब योगस्थानोंके आठवें भाग मात्र (१/८) ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं । फिर इसको पूर्वोक्त स्थानोंमें मिलानेपर सात बटे आठ भाग (७/८) होते हैं । अब यहां इतने ही ज्ञानावरणके प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं । >

< अब सप्तविध और षड्विध बन्धकोंका आश्रय करके पाये जानेवाले स्थानोंकी प्ररु--पणा करते हैं । वह इस प्रकार है--जघन्य योगस्थानसे बांधनेवाले षड्विध बन्धकके ज्ञाना-वरणद्रव्यसे उसकी अपेक्षा छठे भागसे अधिक योगस्थान द्वारा बांधनेवाले सप्तविध बन्धकका ज्ञानावरणद्रव्य समान होता है । पुन: सात प्रक्षेपोंसे अधिक योगस्थान द्वारा बांधनेवाले सप्तविध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यसे षड्विध बन्धकके छह योगस्थान चढकर बांधनेवालेका ज्ञानावरणद्रव्य समान होता है । यहां पांच प्रदेशबन्धस्थान अपुनरुक्त पाये जाते हैं । छठा स्थान पुनरुक्त होता है, अत: उसको कम करना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानसे बांधनेवाले सप्तविध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यसे उत्कृष्ट स्थानकी अपेक्षा सातवें भागसे हीन योगस्थान द्वारा बांधनेवाले षड्विध बंधकके ज्ञानावरणद्रव्यके समान हो जाने तक ले जाना चाहिये । >

`जादं (अ-आ-काप्रतिषु 'जादो' इति पाठः।) त्ति । पुणो छव्विहबंधगट्ठिदजोगट्ठाणादो हेट्ठिमट्ठाणेसु उप्पण्णअपुणरुत्तट्ठा- णाणि भणिस्सामो । तं जहा- छसु जोगट्ठाणेसु जदि पंचअपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति तो सत्तभागहीणजोगट्ठाणेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सव्वजोगट्ठाणाणं पंच-सत्तभागा लब्भंति।

| |
|---|
| ५<br>७ |

पुणो छव्विहबंधगे पक्खेवुत्तरकमेण उवरिमजोगट्ठाणे बंधाविदे सत्तमभाग- मेत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति । पुणो एदाणि पुव्विल्लट्ठाणेसु पक्खित्ते्सु छ-सत्तभागमेत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति ।

| |
|---|
| ६<br>७ |

अट्ठविह-छव्विहबंधगाणं सण्णिकासो णत्थि, पुणरुत्तपदेसबंधट्ठा-णुप्प-त्तीदो । एत्थ पुणरुत्तकारणं जाणिदूण वत्तव्वं ।

| | | |
|---|---|---|
| १ | ७<br>८ | ६<br>७ |

एदेसिं सरिसच्छेदं कादूण मेलाविदे एत्तियं होदि ।

| |
|---|
| २<br>४<br>१<br>५<br>६ |

पुणो एदेसि-मसं-खेज्जदिभागमेत्ताणि आउअबंधस्स छ--व्विह बन्धस्स च अप्पाओग्गाणि उववाद-एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि एत्थ पक्खिविदव्वाणि । एवं पक्खित्ते जोगट्ठाणेहिंतो णाणावरणीयस्स पदेसबन्धट्ठाणाणि पयडिविसेसेण बिसेसाहियाणि त्ति

------------------------------

< अब षड्विध बन्धकमें स्थित योगस्थानसे नीचेके स्थानमें उत्पन्न अपुनरुक्त स्थानोंको कहते हैं । यथा--- छह योगस्थानोंमें यदि पांच अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं तो सातवें भागसे हीन योगस्थानोंमें वे कितने पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर सब योगस्थानोंके सात भागोमेंसे पांच भाग प्राप्त होते हैं---५/७ । पश्चात् षड्विध बन्धकको प्रक्षेप अधिक क्रमसे उपरिम योगस्थानके बंधानेपर सातवें भाग मात्र प्रदेशबन्धनस्थान पाये जाते हैं । अब इनको पूर्वके स्थानोंमें मिलानेपर सात भागोंमेंसे छह भाग प्रमाण प्रदेशबन्धस्थान प्राप्त होते हैं ५/७ + १/७ = ६/७ । अष्टविध और षड्विध बंधकोंमें समानता नहीं है, क्योंकि, वहां पुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थानोंकी उत्पत्ति है । यहां पुनरुक्त होनेके कारणको जानकर कहना चाहिये । १ + ७/८ + ६/७ इनके समान छेद करके मिलानेपर इतना होता है ५६/५६ + ४९/५६ + ४८/५६ = १५३/५६ २ ४१/५६ । अब इसमें इनके असंख्यातवें भाग मात्र आयुबंध और षड्विध बन्धके अयोग्य उपपाद और एकान्तानुवृध्दि योगस्थानोंको मिलाना चाहिये। इस प्रकार मिलानेपर योगस्थानोंकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान प्रकृति--विशेषसे विशेष अधिक हैं, यह सिध्द होता है । इसी प्रकार शेष कर्मोंके भी सम्बन्धमें >

-------------------------------



ʻसिध्दं । एवं सेसकम्माणं पि वत्तव्वं । णवरि आउअस्स पयडिविसेसेण विसेसाहियत्तं णत्थि, अट्ठविहबंधगं मोत्तूण अण्णत्थ तस्स बंधाभावादो ,।

ʻमोहणीयस्स पुण छव्विहबंधगेण सण्णिकासो णत्थि त्ति सत्तट्ठविहबंधगाणं सण्णिकासे कीरमाणे अपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि जोगट्ठाणेहिंतो विसेसाहियाणि ।

१
७
८

सुत्ते पुण एसो विसेसो ण परुविदो । सव्वकम्माणं पि पयडिविसेसेण पदेस--बंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि त्ति वुत्तं कधं घडदे ? ण, संखेज्जगुणे वि विसे-साहियत्तं पडि विरोहाभावादो । ण आउएण विअहिचारो, पाधण्ण (अ-आ-काप्रतिषु ‘पावण्ण’ इति पाठः।) फलावलंबणादो । अधवा एसत्थो (मप्रतिपाठोऽयम्, प्रतिषु ‘एदस्सत्थो’ इति पाठः।) ण एदस्स सुत्तस्स होदि, सबाहत्तादो।

कधं सबाहत्तं ? पय-डिविसेसो णाम पयडिसहाओ । ण तस्स पयडिसण्णिकासववएसो अत्थि, अण्णत्थ तहाणुवलंभादो । पयडिसण्णिकासे कीरमाणे वि जोगट्ठाणेहिंतो ण सव्वकम्मपदेस--बंधट्ठाणाणं सादिरेयत्तमत्थि, मोहणीयं मोत्तूण अण्णत्थ तदणुवलंभादो । तदो एवमेदस्स अत्थो घेत्तव्वो - तम्हा जाणि चेव जोगट्ठाणाणि ताणि चेव

------------------------------

< कहना चाहिये । विशेष इतना है कि प्रकृतिविशेषसे आयुके विशेष अधिकता नहीं है, क्योंकि, अष्टविध बन्धकको छोडकर अन्यत्र उसके बन्धका अभाव है । >

< परन्तु मोहनीय कर्मके षड्विध बन्धकके साथ चूंकि समानता नहीं है, अत: सप्त-विध और अष्टविध बन्धकोंकी समानता करते समय अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान योगस्थानोंसे विशेष (१७/८) अधिक हैं । परन्तु सूत्रमें यह विशेषता नहीं बतलाई गई है । >

< शंका--सब कर्मोंके भी प्रदेशबन्धस्थान प्रकृतिविशेषसे विशेष अधिक हैं, यह कथन कैसे घटित होता है । >

< समाधान--नहीं, क्योंकि, संख्यातगुणितमें भी विशेष अधिकताके प्रति कोई विरोध नहीं है । आयु कर्मसे व्यभिचार आता हो, सो भी बात नहीं है; क्योंकि, यहां प्रधान रुपसे फलका अवलम्बन किया है । अथवा यह अर्थ इस सूत्रका नहीं है, क्योंकि, वह बाधायुक्त है । >

< शंका--वह बाधित कैसे है ? >

< समाधान--प्रकृतिविशेषका अर्थ प्रकृतिस्वभाव है । उसकी प्रकृतिसन्निकर्ष संज्ञा नहीं है, क्योंकि, दूसरी जगह वैसा पाया नहीं जाता । प्रकृतिसन्निकर्ष करनेपर भी योग--स्थानोंकी अपेक्षा सब कर्मप्रदेशबन्धस्थानोंके साधिकता नहीं बनती, क्योंकि, मोहनीयको छोडकर अन्य कर्मोंमें वह पायी नहीं जाती । >

< इस कारण इस सूत्रका अर्थ इस प्रकार ग्रहण करना चाहिये--अत एव 'जाणि चेव जोगट्ठाणाणि ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि' ऐसा कहनेपर योगस्थानोंसे >

------------------------------



'पदेसबंधट्ठाणाणि त्ति वुत्ते जोगट्ठाणेहिंतो सव्वकम्मपदेसबंधट्ठाणाणमेगत्तं परुविदं, पदेसा बज्झंति एदेणेत्ति जोगट्ठाणस्सेव पदेसबंधट्ठाणववएसादो । बंधणं बंधो त्ति किण्ण घेप्पदे ? ण,

पदेसबंधट्ठाणाणमाणंतियत्तप्पसंगादो (का-ताप्रत्यौ 'आणंतियप्पसंगादो' इति पाठः।) । जदि जोगादो पदेसबंधो होदि तो सव्वकम्माणं पदेसपिंडस्स समाणत्तं पावदि, एगकारणत्तादो । ण च एवं, पुव्विल्लप्पाबहुएण सह विरोहादो त्ति । एवं पच्चवट्ठिदसिस्सत्थमुत्तरसुत्तावयवो आगदो णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि त्ति । पयडी णाम सहाओ, तस्स विसेसो भेदो, तेण पयडिविसेसेण कम्माणं पदेसबंधट्ठाणाणि समाणकारणत्ते वि पदेसेहि विसेसाहियाणि (अ-आ-प्रत्योः 'पदेसे वि विसेसाहियाणि', काप्रतौ 'पदेसे विसेसाहियाणि', ताप्रतौ 'पदेसेवि (हि)', मप्रतौ 'पदेसेहि वि विसेसाहियाणि' इति पाठः।)। तं जहा -- एगजोगेणागदएगसमयपबध्दम्मि सव्वत्थोवो आउवभागो । णामा-गोदभागो तुल्लो विसेसाहिओ । णाणावरणीयदंसणावरणीय-- अंतराइयाणं भागो तुल्लो विसेसाहियो । मोहणीयभागो विसेसाहियो । वेयणीय-भागो विसेसाहिओ । सव्वत्थ विसेसपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण हेट्ठिम-हेट्ठिमभागे खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं होदि । वुत्तं चङ्ग

------------------------------

< सब कर्मप्रदेशबन्धस्थानोंकी एकता बतलाई है, क्योंकि, प्रदेश जिसके द्वारा बंधते हैं वह प्रदेशबन्ध है, इस निरुक्तिके अनुसार योगस्थानोंकी ही प्रदेशबन्धस्थान संज्ञा प्राप्त है । >

< शंकाङ्ग'बन्धणं बंधो' ऐसा भावसाधन रुप अर्थ क्यों नहीं ग्रहण किया जाता है ? >

< समाधान--नहीं, क्योंकि, इस प्रकारसे प्रदेशबन्धस्थानोंके अनन्त होनेका प्रसंग आता है । >

< यदि योगसे प्रदेशबन्ध होता है तो सब कर्मोंके प्रदेशसमूहके समानता प्राप्त होती है, क्योंकि, उन सबके प्रदेशबन्धका एक ही कारण है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वैसा होनेपर पूर्वोक्त अल्पबहुत्वके साथ विरोध आता है । इस प्रत्यवस्था युक्त शिष्यके लिये उक्त सूत्रके 'णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि' इस उत्तर अवयवका अवतार हुआ है । प्रकृ-तिका अर्थ स्वभाव है, उसके विशेषसे अभिप्राय भेदका है । उस प्रकृतिविशेषसे कर्मोंके प्रदेशबन्धस्थान एक कारणके होनेपर भी प्रदेशोंसे विशेष अधिक हैं । यथा-- एक योगसे आये हुए एक समयप्रबध्दमें सबसे स्तोक भाग आयु कर्मका है । नाम व गोत्रका भाग तुल्य व आयुके भागसे विशेष अधिक है ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय व अन्तरायका भाग तुल्य होकर उससे विशेष अधिक है । उससे

मोहनीयका भाग विशेष अधिक है । उससे वेदनीयका भाग विशेष अधिक है । सब जगह विशेषका प्रमाण आवलीके असंख्यातवें भागसे नीचे नीचेके भागको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र होता है । कहा भी है--- >

------------------------------

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

< आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहियो । >

< आवरणमंतराए भागो अहियो दु मोहे वि ।। २८ ।। >

< सव्वुवरि सोहणीए (अ-आ-काप्रतिषु 'मोहणीए', ताप्रतौ 'मोहणीए (वेयणीए)' इति पाठः।) भागो अहिओ दु कारणं किंतु ।>

< पयडिविसेसो कारण णो अण्णं तदणुवलंभादो (आउगभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहियो । घादितिये वि य तत्तो मोहे तत्तो तदो तदिये ।। सुह-दुक्खणिमित्तादो बहुणि-ज्जरगो त्ति वेयणीयस्स । सव्वेहितो बहुगं दव्वं होदि त्ति णिद्दिट्ठं ।। गो.क.१९२-१९३ कमसो वुड्ढठिईणं भागो दखियस्स होइ सविसेसो । तइयस्स सव्वजेट्ठो तस्स फुडत्तं जओ णप्पे ।। पं.स.१,५७८.) ।।२९ ।। >

'एवं वेयणदव्वविहाणेत्ति समत्तमणुओगद्दारं ।'

------------------------------

< आयुका भाग स्तोक है । उससे नाम और गोत्रका भाग विशेष अधिक होता हुआ परस्पर समान है । उससे ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायका भाग अधिक है । उससे अधिक भाग मोहनीयका है । वेदनीयका भाग सबसे अधिक है । किन्तु इसका कारण प्रकृति--विशेष है, अन्य नहीं है, क्योंकि, वह पाया नहीं जाता ।।२८-२९ ।। >

< इस प्रकार वेदनाद्रव्यविधान नामक यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ । >

------------------------------